सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• विनीता पैगवार

सृजक-सृजन-समीक्षा

विनीता पैगवार

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत
"सृजक"
विनीता पैगवार का परिचय

नाम-विनीता पैगवार
माता का नाम-श्रीमती चंद्रावती पैगवार
पिता का नाम-श्री हनुमान प्रसाद पैगवार
पति का नाम-डॉ अनिल कुमार कोरी
जन्मतिथि- 03 नवंबर
जन्म स्थान-जबलपुर
शिक्षा-MA इतिहास
बीएड शिक्षा
कार्यक्षेत्र-शासकीय शाला आनंदकुंज गढ़ा जबलपुर
विधा-गद्य लेखन काव्य लेखन
ईमेल-vineetapaigwar03@gmail.
com
मो.नं-9424726827
प्रकाशन-रेनू की दिव्य ज्योति पुस्तक का विमोचन
अनेक पुस्तको एवं समाचार पत्रो में काव्य रचना
सम्मान-पाथेय सम्मान,सृजन शब्द शक्ति सम्मान,हिंदी सेवी सम्मान,साहित्य रत्न अलंकरण सम्मान,साहित्य गौरव रत्न अलंकरण सम्मान,हिंदी सागर सम्मान,सहृदयता रचनाकार सम्मान।
अन्य प्रस्तावित सम्मान।
अन्य उपलब्धिया-श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान।
लेखन का उद्देश्य-अपने भावनाओ को सृजनात्मक रूप देना।

लेखन के प्रति विचार-सामाजिक क्षेत्र में नैतिकता व आध्यात्मिक भावना का विकास।
पता-1083,संजीवनी नगर गढ़ा जबलपुर म.प्र.

आत्मकथ्य

मैं बचपन से नाना -नानी के घर पली बढ़ी हूँ।मेरे माता -पिता दोनों शिक्षक थे बहुत ही सीधे साधे सच्चे
पालक है मेरे।
मेरे नाना जी कहानीकार व नाटककार थे। यहाँ जबलपुर में उनके लिखे नाटक मंचित हो चुके थे।
मेरे पिता बहुत ही आध्यात्मिक
स्वभाव के है।सद्गुरु ओशो के परमभक्त स्वयम् ओशो ने उन्हें दीक्षा दी थी। वे मुझे छोटी -छोटी पुस्तक पढ़ने बचपन से दिया करते थे।
अपनी कापियों में किस्से कहानी लिखना मुझे बहुत भाता था। पर मेरी प्यारी मौसी अचानक दूर चली गई, मैंने उनके अच्छे कार्यो का उल्लेख कहानी के रूप में दैनिक भास्कर
अख़बार में प्रकाशित कराया ,वह मुझे बहुत कम ही लगा,फिर मैंने उनके पूरे जीवन का विवरण उपन्यास के रूप में लिखा, जिसमे मेरे नाना -नानी व सभी मौसी अपनी माँ की बचपन से मौसी की अंत समय तक की सही घटनाक्रम को कथा के रूप में प्रस्तुत किया ।मेरे प्राचार्य पिता बहुत हर्षित हुए,रेणु की दिव्य ज्योति पढ़कर।
मेरे पति ने भी मेरा हमेशा उत्साहवर्धन कर मार्गदर्शन किया।
फिर प्रीति जी का साथ और अंतरा समूह ने मेरे लेखन को गति प्रदान की। मैं प्रीति जी व आप सब की हृदय से आभारी हूँ।

विनीता पैगवार

"सृजक का सृजन"

सुख का सागर

इस दुनिया में सुख का सागर मां में ही समाया है
जनम जनम का प्यार अपनी माता से ही पाया है

अपनी खुशियां हम पर वारे सारे दुख हंसकर सह जाये
ममता के इस रूप में छिपा प्रभु का ही साया है

उनकी सी शीतल छाया को कभी ना दूर करना, उपकारों के बदले उनको
अपना प्यार तुम देना उनके नयनों से दर्द की तुम पहचान लेना

अपनी भक्ति से उनका, जीवन तुम सफल कर जाना
तब होगी सच्ची आराधना माँ के देवी रूपों की समृद्धि की आशीष
मिलेगा

जब कृपा होगी तुम पर मां की

खजाना

प्यारी वसुंधरा नीला आकाश भखभली हरियाली चुनरी ऊंचे पर्वत की श्रंखलायें चंचल नदियों का कलकल अस्तित्व के खजाने को देख मन प्रफुल्लित हो प्रभु के प्रति नतमस्तक हो जाता है

माता पिता के प्यार को उनके उपकार असीम दुलार अनवरत चलने वाली स्नेह की बारिश, जैसे हम ही उनके जीवन हो देखकर हृदय गद-गद हो जाता है

कभी ज्ञान के अथाह सागर में अनंत खजाना देखती है तो कभी न खत्म होने वाले विशाल समुद्र नजर आता है

कितना दबाव गगरी को खाली की खाली रहती है

क्या बात है रब के इंतजाम की खजानों से अस्तित्व सजाया है स्वर्ग से प्यारी सम्पदा का मालिक हमें बनाया है

लूट सको तो लूट ले बंदे पड़ा खजाना बेहिसाब पा कर के अभिमान ना करना, वरना कुछ ना रह जायेगा तेरे पास।

खता

हर दिन खता करते हैं हम ये खुद ना जान पाये हम

भूल जाते हैं हम गुनाहों को जैसे दरिया डूबा देती है, छोटे कंकरों को

रास्ते में कदमों तले दब जाते हैं असंख्य जीव जिसकी आहट तक नहीं अाती

गर खुदा गिनती हमारे गुनाहों की जीने की बात छोड़ो, अश्क दरिया में समा जायेगा

गलती इंसान से होती है तो क्यों इतराये दूसरे की भूल देखकर

किसी संत ने कहा है क्षमा बड़ेन को चाहिए।

प्यारा अनुबंध

कहीं तुलसी की अमृत वाणी श्री राम से मिलाती है देकर सीख मर्यादा की वचन निभाना सिखाती है

कहीं दास कबीर की अमृत वाणी निराकार से मिलाती है सत्य की नाव में बिठाकर पार हमे कर जाती है

कहीं ओशो की अमृत अमृत वाणी ज्योत अंतस को जगाती है ध्यान सुंदर रूपो से "परमज्ञान" पर ले जाती है

कहीं मीरा की अमृतवाणी भक्ति की राह दिखाती है भज गोविन्दम् भज गोविन्दम् विष को अमृत कर जाती है

कहीं बुल्लेशाह की अमृतवाणी सूफी कीे मस्ती बताती है छोड़ ठाठ-बाट,वो महलों के फखिरी में आनंद पाती है

कैसा? था अनुबंध इनका अपने पिता परमेश्वर से करते थे सबके दिलों में "राज" वो प्यार रूपी अनुबंध से।

सुख और दुख

जब खुशियां छम-छम आती है
सारा आलम विहासना से भर जाता है
सर्वत्र एक नई ऊर्जा मदहोश करने लगती है

क्यों मन दुख में विफल हो जाता है
क्यों प्रभा नीरस नजर आती है
पोर-पोर विहाल हो जाता है

सुख अगर मीठा है तो दुख है नमकीन
दोनों परेशान थाल में तो तू खोये क्यों धीर
हर पल हम होश में रहकर बन जाये रणवीर।

कृपा का प्रसाद

खुद से खुद का मिलन बड़ा अनोखा है
लोग कहते है कि खुद में ही खुदा बसता है

एक गहन ख़ामोशी अन्तस के तार बजाती है छा जाती है इक खुमारी और
बिन पिये हम बहकते है

चंद लम्हे तू मुलाकात कर अपने से कैसा?न होगा दीदार तेरा उस रब से।

कब तक भटकता रहेगा तू प्राणी जरा जान ले तू भी तुझमे छिपे उस
दिव्य की कहानी

छट जायेगा अंधियारा मुस्कुराने लगेगा प्रकाश हर क्षण बरसेगा उसकी ही
कृपा का प्रसाद।

कर्ज

कैसे चूका पाऊँगी?
सूरज की गर्मी का
चन्द्रमा की शीतलता का
हवाओं के झोंको का
जल की मधुरता का
धरती की उपजो का
कर्ज कैसे चुका पाऊँगी?

जननी के गर्भ का
पिता के पालन का
बुजुर्गो के लाड़ का
भाई के स्नेह का
बहन के दुलार का
सहेलियों के साथ का
कैसे कर्ज चूका पाऊँगी?

पति के शृंगार का
सासु के उपकार का
बच्चों के अपनापन का
घर के सुखद अहसास का
कर्ज कैसे चूका पाऊँगी?

जिंदगी के सुख-दुःख का
लोगोँ के अच्छे व्यवहार का
उस परमात्मा का कर्ज कैसे
चुका पाऊँगी?

पग -पग पर कर्ज का दामन
फैला है
न समझना तू बिलकुल अछूता है
तोड़ दे तू सारे अहंकार राही
बिना कर्ज के तेरा जीवन अधूरा
है....

"सृजन की समीक्षा"

1.

"सप्ताह का कवि"शीर्षक से सुशोभित
व्यक्तित्व आपका स्वयं है आलोकित
शिक्षकों की छाँव में,शिक्षक पला बढ़ा
लेखन ने नाना के,लेखक किया बड़ा
नैतिकता,आध्यात्म सदस्य थे घर के
प्रेम अपनों का खिला,तुम पे ज्यों निखर के|
पावन स्वलेखनी को तुमने कर लिया
माँ जैसी मौसी को अजर अमर किया|
दिग्गज को कला में दिख सकती है दिक्कत
लेकिन ये जान लो भाव हैं बड़े सशक्त
रचनाओं का दिल से तुमने किया सृजन
सच्चाई की कलम ने ओढ़ा न आवरण
सुख का है सागर माँ,सागर में खजाना
न कर खता,खुदा को जो तुझे पाना
परम पिता से हो जो प्यारा अनुबन्ध
सुख दुख से नहीं,वीर के कर्मों में प्रतिबन्ध
भाव "कर्ज" के सबसे प्रिय मुझे लगे
मैं भी हूँ कर्जदार भाव मन में ये जगे
शुभनमन हमारा अतः आपको दिल से
अच्छा लगा हमें आज आप से मिल के

हेमा तिवारी भट्ट

2.

विनीता पैगवार जी को सप्ताह के कवि के रुप में पा कर पटल धन्य हैं... भावना प्रधान लेखन ही आपकी पहचान है, इस बात में कोई दो राय नहीं...

आपका आत्मकथ्य ही सम्पूर्ण का परिचय सौंप रहा हैं |

आपकी रचनाएं

1.सुख का सागर

माँ की महिमा का सुन्दर वर्णन, यह शब्द ही ऐसा है, जिसमें संसार का सृजन समाहित हैं |

2.खजाना

बहुत सुन्दर, रुपकों का सटिक उपयोग

3.खता

वाह... बेहतरीन अभिव्यक्ति

4.प्यारा अनुबंध

वाह... वाह... प्रेरक पंक्तियाँ

5.सुख और दुख

क्या कहने... बेहतरीन रचना, नव उर्जा की वाहक है कविता

6.कृपा का प्रसाद

यह रचना उपरोक्त रचनाओं से कम छाप छोड़ रही है, पर सृजन तो सृजन है... बेहतर हो सकती हैं

7.कर्ज

हम सम्पूर्ण प्रकृति के कर्जदार हैं..

सुन्दर भाव...

आप इसी तरह उन्नति करें, यही कामना हैं ...

संजय जैन कोचर'

3.

अति सुन्दर आयोजन

आज विनीता जी को पढ़कर अच्छा लगा ।

मेरी अपनी जानकारी में ये चौथा दम्पत्ति युग्म है ,जो अंतरा में क्रिया शील है ।

डॉ कोरी और विनीता जी शानदार सृजक हैं ।।

सृजन के कीटाणु लेखिका में, बाल्यावस्था से ही प्रविष्ट हो गये थे ।

लेखिका का आध्यात्म के प्रति जो सहज रुझान परिलक्षित होता है, उसके कारण स्पष्ट हैं ।।

सुख का सागर:- माँ को महिमान्वित करती एक सुन्दर रचना है ।

सतत् माँ की कृपाकांक्षी लेखिका,

सब कुछ माँ में ही तलाश लेती हैं ।।

खज़ाना :-प्रकृति को समर्पित रचना है ।

और कुछ गड्डमड्ड सी हो गयी है ।।

भाव उलझ से गये हैं ।।

मखमली हरियाली

ख़ता:- छोटी सी रचना जो हमें **खुद पर दृष्टि पात** करने की सलाह देती है ।

प्यारा अनुबन्ध :**-पहुँची हुई आत्माओं का परम् सत्ता से योग का आख्यान है।**

अपने अपने रास्तों से मन्ज़िल का पता देती ,

फ़क़ीरी ; **शहन शाहों के ताज़**

से बढ़कर है, ये अहसास कराती रचना ।

खुद के साक्षात्कार को आतुर मन, बुल्ले शाह जैसे ही तलाश में है ।।

बुल्ले की जाणा मैं कौन??

सुख और दुःख:- दोनों स्थितियों को परिभाषित करती एवम् समत्व से स्वीकार कर लेने की सलाह देती रचना है ।।
कृपा का प्रसाद:-फिर से एक बार खुद में खुद की तलाश का आव्हान है ।।
सुन्दर रचना
क़र्ज़ :-लेखिका के तमाम सरोकारों
को ,अभिव्यक्ति देती खूबसूरत रचना है ।।
प्रकृति से जो अनायास मिला,
सायास लौटाने की चाह,
रिश्ते नातों का विस्तृत संसार
और व्यापक फ़लक़ समेटती रचना जहाँ हर प्राणी किसी न किसी रूप में कर्ज़दार है ।।
खूबसूरत रचनाएँ कहीं 2 टँकण त्रुटि की वजह से रस भँग करती हैं ।
अल्प विराम ,पूर्ण विराम आदि की त्रुटियाँ भी काफ़ी खलती हैं ।
संज्ञान लें ।
शुभकामनाएँ
जय हो, विजय हो ।

ब्रजेश शर्मा विफल
झाँसी

4.

सृजक सृजन समीक्षा विशेषांक में स्वागत है आपका आ विनिता जी। संक्षिप्त परिचय, प्रकाशन, सम्मान, उपलब्धियाँ , लेखन का उद्देश्य, आत्मकथ्य बेहद प्रभावशाली है। सरल, सहज, कोमल हृदय के पालक, नानाजी कहानीकार व नाटककार, आध्यात्मिक वातावरण में पालन पोषण तो क्यों न आपके जैसा संवेदनशील हृदय जन्मे और साहित्य का पोषण करे। आज ऐसे बचपन और ऐसे पालकों की कमी महसूस होती है।
आपकी पहली रचना **सुख का सागर** माँ के विशाल हृदय को समर्पित

सुन्दर अभिव्यक्ति है। सही कहा आपने कि देवी माँ के स्वरुपों की भक्ति तभी सफल होगी जब हम अपनी अपनी माँओं को संतुष्ट रखेंगे। बहुत खूब।

दूसरी रचना **खजाना** ईश्वर ने प्रकृति की रचना की हमारी भौतिक सुख सुविधाओं के लिए, घर परिवार दिया हमारी भावनात्मक सुविधाओं के लिए, हर तरफ प्रेम का खजाना है , बस उसे लूटना और संभालना आना चाहिए, साथ ही अभिमान किया तो सब बेकार है। बहुत सुन्दर भाव। कहीं कहीं वर्तनी दोष जाँच लें।

: तीसरी रचना **खता**,मनुष्य हर दिन जाने अनजाने कुछ न कुछ खता करता है , जो स्वयं भी नहीं जान पाता इसलिए , सदा क्षमा की भावना मन में रखें क्योंकि इसी में बड़प्पन है। रचना और परिष्कृत हो सकती है , बेहतरीन अभिव्यक्ति।

: चौथी रचना, **प्यारा अनुबंध** भक्ति रस में डूबी हुई सुन्दर रचना है।

: पाँचवीं रचना **सुख और दुःख**, वाह वाह बहुत खूब, सम रहने का पाठ सिखाती बेहतरीन अभिव्यक्ति।

: छठी रचना , **कृपा का प्रसाद**, अनोखा मिलन , स्वयं के अंदर , स्वयं की पहचान कराता है, आध्यात्मिक रचना, अद्भुत अनुभूतियों का अनुभव कराती हुई रचना, बहुत खूब।

सातवीं रचना **कर्ज़**, ग़ज़ब , संवेदनशील हृदय की अभिव्यक्ति, कृतज्ञता प्रकट करने का व्यवहार , सार्थक संदेश देती हुई रचना है।

आपके मृदुल, मिलनसार स्वभाव से परिचित हूँ , आपके उज्जवल भविष्य और स्वास्थ्य के लिए हार्दिक मंगलकामनाएँ प्रिय विनिता जी।

पिंकी परुथी "अनामिका"

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com